शोध पत्र – हिन्दी

चर्चित महिला कहानीकारों में सूर्यबाला जी का स्थान– नारी संवेदना के स्तर पर मन्नू भंडारी

* संगीता राणा ** सुरेश सरोठिया

*-** भाषा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय , इन्दौर

मैं हार गई–

यह कहानी संग्रह सन् 1957 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 12 कहानियाँ संग्रहित है। कहानियों का क्रम इस प्रकार है– ईसा के घर इंसान, गीत का चुम्बन, जीती बाजी की घर, अभिनेता, एक कमजोर लड़की की कहानी, पंडित गजाधर शास्त्री, कील और कसक, दो कलाकार, मैं हार गई।

तीन निगाहो की एक तस्वीर–

यह कहानी संग्रह 1959 में प्रकाशित हुआ, जिसमें कुल 8 कहानियाँ संग्रहित है, वे इस प्रकार है– तीन निगाहो की एक तस्वीर, अकेली अनथाही गहराईयाँ, खोटे सिक्के, घुटन, घर, चश्में, मजबुरी।

यही सच है–

मन्नू जी द्वारा लिखित यह संग्रह सन् 1966 में प्रकाशित हुआ। जिसमें कुल 8 कहानियां संग्रहीत है; जिनका क्रम इस प्रकार है– क्षय, तिसरा आदमी, नशा, सजा, नकली हीरे, इन्कम टैक्स और नींद, रानी माँ का चबुतरा, यही सच है।

एक प्लेट सैलाब–

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1968 में हुआ इसमें कुल 9 कहानियाँ है। ये क्रम से इस प्रकार है– नौकरी, बन्द दराजो के साथ, एक प्लेट सैलाब, छत बनाने वाले, एक बार और, संख्या के पार, बांहों का घेरा, कमरे–कमरा और कमरे, ऊँचाई।

त्रिशंकु–

मन्नू जी के इस पाँचवे कहानी संग्रह का प्रकाशन 1978 में हुआ जिसमें कुल 9 कहानियाँ संग्रहित है– आते–जाते यायावर, दरार भरने की दरार, स्त्री सुबोधिनी, शायद, त्रिशंकु, रेत की दीवार, तिसरा हिस्सा, अलगाव, एखाने आकाश नाई।

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती आधुनिक समय की चर्चित लेखिकओं में है। भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर हिन्दी की विश्वसनीय उपस्थिति कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुधरी रचनात्मकता के लिये जानी जाती हैं। कृष्णा सोबती वैसे एक अर्से से लिख रही है, लेकिन अब तक जो लिखा है वह अधिक तो नही है। कम लिखने को वे अपना परिचय मानती है। जिसे स्पष्ट इस तरह किया जा सकता है कि उनका कम लिखना दरअसल विशिष्ट लिखना है। आदमी की सामाजिक और पारिवारिक दुनिया को उद्घाटित करने वाली उनकी कथा कृतिया कालजयी बन चूकी है।

सोबती जी का लेखनारम्भ कविता से हुआ बाद में कथा–लेखन (कहानी) से। उनकी रचनाओं में एक खास पंजाबी लहजा और तेवर फलस्वरूप एक विलक्षण खुलापन और अनौपचारिकता दिखाई देती है। नारी जीवन के अन्तरंग को पहचानने और उनमें चित्रण में वे सिद्ध हस्त है। लोक जीवन और उसमें सांस्कतिक परिवेश को रेशा–रेशा खोलने वाली कलादृष्टि और हिन्दी–कथा साहित्य को नये रचनात्मक आयाम देती भाषा–शैली। 'बादलों के घेरे' प्रसिद्ध कहानी–संग्रह 'हम हशमत' भाग दो प्रमुख संस्मरण, विविधा 'सोबती' एक सोहबत' आदि कृतियों का उनका सफर हिन्दी कथा–साहित्य और गद्य को एक विशिष्ट चेहरा प्रदान करता है। कृष्णा सोबती के पूरे कथा–साहित्य का कई भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ।

साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता के अतिरिक्त उनके पुरस्कारों और अंलकरणो से शोभित कृष्णा सोबती साहित्य की समग्रता में अपने को साधारणता की मर्यादा में एक छोटी सी कलम का पर्याय ही मानती है। समय को बाँधे जाने वाला लेखन ऐसे लेखन वाले हर आस्थावान व्यक्ति की तरह यह निर्मल और सत्य उनके सामने हमेशा उजागर रहता है।" 'बादलो के घेरे' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी एक ऐसे नायक की कहानी है, जो क्षय–ग्रस्त है। सम्पूर्ण कहानी नायक के इर्द–गिर्द घुमती दिखाई देती है। यह कहानी भुवाली की छोटी सी काटेज से प्रारम्भ होती है। कहानी का नायक रवि क्षय रोग से ग्रस्त होने के कारण परिवार से दूर छोटी सी काटेज में अकेला रहता है। तन्हाइयों में रवि अपनी भूली–बिसरी स्मृतियों में खो जाता है। रवि को अपनी पत्नि मीरा के साथ गुजरे लम्हे याद आते है वह मुन्ना तथा रानी को याद करता है। रवि महसूस करता है कि जो प्यार तन में जगता है, तन से उपजता है, वही देह पाकर दुनिया में जी भी जाता है।कृरवि और मीरा का प्यार मुन्ना और रानी की देह पाकर सजीव हो गया है। 'दादी अम्मा' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी पारिवारिक कहानी है। कहानी की मुख्य नायिका

दादी अम्मा है। सम्पूर्ण कहानी में लेखिका ने पारिवारिक द्वन्द को स्पष्ट रूप से उभारा गया है।

'भोले बादशाह' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी एक ऐसे नायक की कहानी है, जो मानसिक रूप से अविकसित है। यह कहानी मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण कहानी है।

'बहने' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी गई तीन बहनो के आपसी प्रेम और विश्वास पर आधारित कहानी है। सम्पूर्ण कहानी तीनों बहनो के इर्द–गिर्द घूमती दिखाई देती है।

'बदली बरस गयी' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी एक ऐसी युवती की कहानी है, जो बैरागी जीवन छोड़कर सांसारिक जीवन में प्रवेश करती है। यह कहानी सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन के अन्तरद्वन्द को बखुबी पेश करती है।

उषा प्रियवंदा

उषा प्रियवंदा की कहानियों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होने के कारण विघटन की समस्या भी विविध आयामों में सामने आती है। पाश्चात्य संस्कृति और नई परिस्थितियों ने पिढ़ियों के संघर्ष को जन्म दिया। नए को अपनाने की त्वरा में नयी पिढ़ी पुरानी पिढ़ी की हर बात से असहयोग कर उठी है, जिसका परिणाम पारिवारिक विघटन के रूप में सामने आया है। नयी पिढ़ी में अपने बुजुर्गो के प्रति आस्था में घोर उपेक्षा का भाव आता जा रहा है। उषा प्रियवंदा की प्रसिद्ध कहानी 'वापसी' के गजाधर बाबू अवकाश ग्रहण कर आराम व आनंद की जिन्दगी बिताने का स्वप्न संजोकर घर वापस आते है, परन्तु वहाँ उन्हे घोर उपेक्षा का सामना करना पड़ता हैं। बड़ा लड़का उनके आने के पहले घर का मालिक बनकर रहता था। अब उसे बात–बात पर टोकना नागवार लगता है। वह अलग रहना चाहता है। बसन्ती भी पड़ोस में जाने से रोके जाने की वजह से नाराज रहती है। पत्नि को भी उनका बोलना टोकन अच्छा नही लगता। सब उन्हे धनोपार्जन का निमित्त मात्र समझते है। उन्हे लगता है–उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई थी। उनका बेटा अमर कहता है– बुढ़े है चुपचाप पडे रहे। हर चीज में दख क्यो देते है। इससे लगता है कि पदलते परिवेश में वृद्ध पिता अकेलेपन व टूटन का शिकार हो रहे है। बुजुर्ग पिढ़ी की यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है।

चित्रा मुद्गल

समकालीन भारतीय महिला कथाकारो में चित्रा मुद्गल का एक विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानियाँ ऊपरी तौर से भले ही किसी वाद या राजनीतिक प्रतिद्वन्दता का शोर नही करती पर वे मानवीय संवेदना से गहराई से जुड़ी हुई हैं। आर्थिक दबावो के तेजी से हुए प्रभाव को विविधतापूर्ण तथ्य के साथ चित्रा मुद्गल ने प्रस्तुत किया हैं। इनके कहानी संग्रह है– 'इस हमाम में, ग्यारह लम्बी कहानियाँ, जहर ठहरा हुआ, लाक्षा गृह, असफल दाम्पत्य की कहानियाँ तहखानों में बंद आइयो के अक्स आदि।

मालती जोशी

इनकी कहानियों में पारिवारिक विघटन का बड़ा ही मार्मिक चित्रण मिलता है।मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याएँ और उससे उत्पन्न टूटन और बिखराव का बहुत स्वाभाविक वर्णन 'एक घर सपनो का' में मिलता है। पति की शराब पीने की आदत के कारण अम्मा कभी अपनी गृहस्थी न बसा पाई। अधिकतर समय भाई–भाभी के पास ही कटा। जब वहां से अपमानित होती तो पति के घर चली जाती। लेकिन वहां पर भी ज्यादा दिन टिकना सम्भव नही हो पाता। मायके लौटने पर भाभी ताने देती, पति से तिरस्कृत नारी की हर जगह दुर्गति होती है। चाहे ससुराल हो चाहे पीहर में। वह बिना पैसे की नौकरानी होती है। जब चाहा जैसा चाहा काम लिया और छुट्टी। बेटी और बहुओं के घर भी मान आदर है, लेकिन जिस प्रेम के लिये वे तड़पती है वह वहा भी नहीं मिलता। मिलता तो अपनी बेटी के पडोसी से। मुट्ठी भर खुशियाँ, की दीदी भी इसी तरह आदर और सम्मान तो पाती है। पर वह स्नेह नही जिसकी उन्हे जरूरत है। पिता की मृत्यु के बाद अपने भाई बहनों के लिए अपने सुख की परवाह न करने वाली दीदी को अपना घर कह सकने लायक कोई जगह नही।

सूर्यबाला

सूर्यबाला हिन्दी की परिचित कथा लेखिका है। वह अपने समसामयिक चिन्तन को सीधी–साधी सहज भाषा में व्यक्त करती है। उन्होंने दाम्पत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं को अपनी कहानियों में उकेरा है।

डॉ. चन्द्रकला त्रिपाठी के अनुसार ''सूर्यबाला के चरित्र ही नही स्वयं सूर्यबाला भी हरदम जैसे जिरह में है। उनके अनुमानित प्रश्न उस और से है जहॉ साहित्य में कथ्य और चरित्रों को पारम्परिक से तोड़करा नया किया जा रहा है। यथार्थवाद के उस तुर्रे को समझने की बौद्धिक सजगता उसमें हैं। जीवन उनके लिए भी खंडित नहीं है और न की कहानी या उपन्यास में आया जीवन अपनी ऐतिहासिक प्रक्रिया से विच्छिन्न है।

पाठको को अपनी रचना संसार के भीतरी अंग बना देना सूर्यबाला की कला है। सूर्यबाला की कहानियॉ प्रदीप्त संपूर्ण राग की तरह केंन्द्रीत अर्थ के सघनता रूप को उभारने के शिल्प में सजग और समझदार है।

इस दृष्टि से सूर्यबाला की भाषा बहुत सामाजिक और अनुशासित है। परिवेश की समग्रता के लिए वर्णन को बेरोक–टोक चलने देकर भी कहानी के सूक्ष्मतम अर्थों

के संदर्भ में वह सांद्र सघन हो जाती है। भाषा में व्यंग्य की तुर्शी से जनमें विट का तो कहना ही क्या है! प्रेम कहानियों में इनकी अंतरंगता संकेतों में बड़ी बात है। कुल मिलाकर सूर्यबाला के पास एक बहुत सधा हुआ शिल्प है, जो कहानी में वर्णन की परंपरा को नया तो करता है मगर बौद्धिकता, विखंडन या अतिरिक्त कला और अमूर्तन से आक्रांत नहीं करता। सूर्यबाला के समग्र साहित्य में कोई एक तार बारीक से प्रवेश कर सब कुछ को थाम रहा है, तो वह जीवन के सूक्ष्म सारमय और मानवीय पर उनका विश्वासकृ।

सूर्यबाला ने नारी मुक्ति के आंदोलन से अपने नजरिए को सीमित नहीं किया है, परंतु पुरूश द्वारा किए गए अन्याय अत्याचार, दर्द को वे भलीभाँति जानती हैं। 'सुमिंतरा की बेटियाँ में यह दर्द स्थितियों की जटिलता के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी की कर्मठता जो पति द्वारा परित्यक्त किए जाने पर अपनी नन्हीं बेटियों की देखभाल में और अपमानित होने का दुख अकेलेपन में मूक होकर सहने में व्यक्त होता है।

नारी की कर्मठता और मूक व्यथा सूर्यबाला की कहानियाँ का एक मुख्य सरोकार है। सौभाग्य से उनका यह सरोकार मध्यवर्गीय नारी जीवन तक सीमित नहीं है। इसलिए विवाह या प्रणय के आसपास रेंगनेवाली कहानियों से उनका क्षेत्र अधिक व्यापक भी हो गया है और उसमें व्यक्त दर्द, जीवन की आंतरिक अनुभूतियों से अधिक संबद्ध है और समृद्ध भी है।

यह जानने के लिए कि दुख, संताप और संत्रास सूर्यबाला की कहानियों में इतने सघन रूप में बूंद–बूंद कैसे टपकते हैं, उनका आत्मकथांश पढ़ना चाहिए। निजी जीवन के पूर्वाद्ध मे दुख और उत्तरार्द्ध में सुख सूर्यबाला का व्यक्तिगत हासिल है। इसीलिए वह लिखती हैं– विपन्नता की निरूपायता के साथ–साथ खेलते खाते जीवन के बीचोंबीच भी बैठकर देखा तो यही जाना कि दुख, दुख होते हैं, संपन्न और विपन्न नहीं हुआ करते। उन्हें बड़ा और छोटा बताना कलम की नादानी है। बता दे कि अबोध बचपन के दारुण और दहशतजदा अहसासों से मुसलसल तपते रहकर ही सूर्यबाला की कलम को वह आकार मिला है, जो रचनात्मकता की अनिवार्य शर्त लिखी–बताई गई है। वह कहती हैं– 'पिता की मृत्यु हमें समाज में खुलेआम निरीह और अनाथ प्रमाणित कर गई थी। हमारी ऊँची होती फ्रॉकें, ऊँची होती क्लासें, बढती उम्र, बढ़ती फीस प्रायः सहमा जातीं हमें। बरसों–बरस, माँ हम बच्चों से छिपकर घर के किसी कोने में रोती।

कुल मिलाकर, सूर्यबाला की कहानियाँ भविष्य की उम्मीद की कहानियाँ हैं। वे हमारे समय की उम्मीद को तो रेखांकित करती ही हैं, आगत की उम्मीद की गाँठों को भी खोलती नजर आती हैं। यही उनकी सार्थकता भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मालती जोशी के कथा साहित्य का एक अनुशीलन : श्रुति शिरढ़ोंणकर
2. कृष्णा सोबती का कहानी साहित्य : निर्देशक डॉ. राजेन्द्र मिश्र
3. गोविन्द मिश्र : नया प्रतिक, सम्पादक अज्ञेय
4. शब्द–शब्द मानुषगंध : संपा.डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ